

अनुसंधान दर्शिका प्रथम भाग
खण्ड - क
एम.डी. आयुर्वेद शोध प्रबन्ध सारांश
अनुक्रमणिका

6 - मौलिक सिद्धान्त

क्र. सं.	शीर्षक का नाम	:	अध्येता का नाम	पृष्ठ नं.
1983				
1.	अर्श अतिसार ग्रहणी का—प्रायः परस्पर हेतुत्व एवं तद्गत अग्निमांद्य का चिकित्सात्मक अध्ययन	:	डा. आनन्द कुमार शुक्ला	1
1984				
2.	ह्वास हेतुर्विशेषश्च—सिद्धान्त का प्रामाणिक अध्ययन	:	डा.योगेश्वर दयाल बंसल	2
3.	अपतर्पणोत्थ व्याधि में सन्तर्पण (सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक अध्ययन)	:	डा.योगेन्द्र कुमार	3
1985				
4.	धातवो हि धात्वाहाराः (च.सू. 28/3)	:	डा. बृजनन्दन गौतम	4
5.	आयुर्वेदीय त्रिदोष सिद्धान्तान्तर्गत श्लेष्म विवेचन	:	डा. राजेश कुमार शर्मा	4
6.	“न च सर्वाणि शरीराणि व्याधि क्षमत्वे समर्थानि भवन्ति”(च.सू. 28/7) के परिप्रेक्ष्य में व्याधि क्षमत्व का आयुर्वेदीय विश्लेषण	:	डा. कमलेश कुमार शर्मा	5
7.	अग्नि विवेचन	:	डा. गोविन्दराम पयासी	6

1986

- | | | | | |
|-----|--|---|-------------------------|---|
| 8. | दोषों का धातु एवं मलों के साथ
आश्रयाश्रयी भाव (सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक
अध्ययन) | : | डा. गणेश पाण्डेय | 7 |
| 9. | देहस्य रूधिरं मूलम्—एक प्रायोगिक अध्ययन | : | डा. सत्यपाल शर्मा | 8 |
| 10. | शरीर का समययोगवाहित्व एक विवेचन | : | डा. विजय कुमार
पारीक | 9 |

1987

- | | | | | |
|-----|--|---|-------------------------|----|
| 11. | मानव प्रकृति परीक्षणात्मक अध्ययन
(वातलाघाः सदातुरा के परिप्रेक्ष्य में) | : | डा. विजय शंकर
पाण्डे | 9 |
| 12. | त्रिदोष एवं नाडी विज्ञान (सैद्धान्तिक एवं
प्रायोगिक अध्ययन) | : | डा. नरेश कुमार शर्मा | 10 |

1988

- | | | | | |
|-----|---|---|-----------------------|----|
| 13. | अरिष्ट विज्ञानीयम् (ग्रहणी रोग के परिप्रेक्ष्य
में) | : | डा. संतोष शर्मा | 11 |
| 14. | “रोगाः सर्वेऽपि मन्देऽग्नौ” उदर रोग के
परिप्रेक्ष्य में अग्निवृद्धिकर भावों का
तुलनात्मक अध्ययन | : | डा. केदार लाल
मीणा | 11 |
| 15. | संतर्पणोत्थ व्याधियों में अपतर्पण का
सैद्धान्तिक विवेचन | : | डा. रुक्मिणी गुप्ता | 12 |

1989

16. आमो विषमचिकित्स्यानाम् : डा. रतन कुमार 13
पारीक

1990

17. "क्षीणेषु दोषेष्वनिलात्मकः स्यात्" के सन्दर्भ : डा. मनोज कुमार 13
में प्रमेह रोग में "सवृंहणं तत्र कृशस्य शर्मा
कार्यम्" का सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक
अध्ययन
18. उपप्लुता योनिव्यापद् में पलाशादि कल्क : डा. सीमा जैन 14
प्रयोग द्वारा "सपिच्छला परिविलन्ना
स्तम्भनः कल्क इष्यते" सिद्धान्त की पुष्टि